पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 ...त: 16.07.2018 इस अंक का मल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

...य आर्य युवक परिषद्

युवा संस्कार अभियान

दिनांक 10 अगस्त से 19 अगस्त 2018 तक

5000 युवाओं को

यज्ञोपवीत देने का स...

आईये, आप भी सहयोगी ...

सम्पर्क: 9971467978, 9958889970

वर्ष-35 अंक-4 श्रावण-2075 दयानन्दाब्द 194 16 जुलाई से 31 जुलाई 2018 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.07.2018, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन सोल्लास सम्पन्न

यदि महर्षि दयानन्द न होते तो आज रामदेव भी न होता –स्वामी रामदेव जी

यदि महर्षि दयानन्द न होते तो पाकिस्तान अलीगढ़ तक होता –राज्यपाल सतपाल मलिक

शनिवार, 7 जुलाई 2018, योगगुरू स्वामी रामदेव जी से पंतदीप, पतजंलि योगपीठ में उनके आवास पर भेंट हुई तथा आर्य समाज की एकता व वर्तमान स्थिति, संगठनात्मक विषयों पर चर्चा हुई। चित्र में स्वामी रामदेव जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य, डा. वेदप्रताप वैदिक, महेन्द्र भाई, रामकुमार सिंह, प्रवीन आर्या, साथ ही डा. जयदीप आर्य, राकेश मितल, ईश आर्य, कवि हरिओम पवार, माधवसिंह, वरूण आर्य, साहिल आर्य आदि भी उपस्थित थे।

हरिद्वार। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार की ऐतिहासिक स्थली में दिनांक 6, 7 व 8 जुलाई 2018 को तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का भव्य आयोजन स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता व सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश के कुशल नेतृत्व में किया गया। सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों से व विदेशों से हजारों आर्य जन व गुरूकुलों के ब्रह्मचारी उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए तथा इस अवसर पर शानदार शोभा यात्रा का आयोजन भी किया गया।

महासम्मेलन का उद्‌घाटन सुप्रसिद्ध योगगुरू स्वामी रामदेव जी ने किया उन्होंने अपने उद्‌घाटन भाषण में कहा कि यदि महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द ने होते तो आज यहां स्वामी रामदेव भी न होता, उनके समाज पर अनेकों उपकार है उन्होंने सोयी हुई हिन्दू जाति को जगाया और मेरे जैसे अनेकों लोग वेद प्रचार,आर्य समाज व राष्ट्र के लिये समर्पित हो गये। स्वामी रामदेव ने आर्य समाज के विघटन पर चिन्ता व्यक्त करते हुए सभी पक्षों को मिलकर कार्य करने का आह्वान किया। स्वामी रामदेव ने आर्य समाज के लोगो को राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने का आह्वान किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा पद्वति ही मानव समाज को आगे ले जा सकती है, लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्वति को बदल कर वैदिक शिक्षा पद्वति को स्थापित करना देश के नवनिर्माण में आवश्यक है। मेघालय के राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद आर्य ने कहा कि अन्धविश्वास समाप्त करने में गुरुकुल शिक्षा का अहम योगदान है। बिहार के राज्यपाल श्री सतपाल मलिक ने कहा कि आर्य समाज के प्रचार कार्य की आज बहुत आवश्यकता है, बढ़ते पाखण्ड अन्धविश्वास का निदान आर्य समाज के पास ही है, उसे ग्रामों व आम आदमी तक पहुंचाने की आवश्यकता है, उन्होंने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द न आते तो पाकिस्तान अलीगढ़ तक पंहुच जाता। केन्द्रीय मंत्री चौ. वीरेन्द्र सिंह ने कहा कि आर्य समाज कमजोर हो रहा है, इसे पुनः मजबूत बनाने की आवश्यकता है।

पतजंलि पीठ के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण जी, विधायक स्वामी यतिश्वरानन्द जी, डा. महावीर अग्रवाल, मायाप्रकाश त्यागी, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी धर्मेश्वरानन्द, डा. वेदप्रताप वैदिक, उतराखण्ड विधान सभा के अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द अग्रवाल,सांसद श्री रमेशचन्द पोखरियाल निशंक,आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय,स्वामी अग्निवेश, स्वामी सच्चिदानंद, स्वामी विश्वानन्द, डा. धर्मेन्द्र शास्त्री, प. सहदेव बेधड़क, पं.रामनिवास आर्य, पं.घनश्याम प्रेमी, श्री कैलाश कर्मठ आदि अनेकों वैदिक विद्वान, संन्यासी, भजनोपदेशको ने अपने विचार रखे।

दिल्ली से भी सैंकड़ो प्रतिष्ठित आर्य जन रविदेव गुप्ता, चतरसिंह नागर,

(शेष पृष्ठ 2 पर)

दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह व योगगुरू आचार्य बालकृष्ण जी का अभिनन्दन

ठाकुर विकम सिंह जी का अभिनन्दन करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश, उपप्रधान अनिल आर्य,स्वामी प्रणवानन्द जी व स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी।
द्वितीय चित्र–आचार्य बालकृष्ण जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते अनिल आर्य,प्रवीन आर्या व ईश आर्य।

अमर ग्रन्थ–सत्यार्थ प्रकाश कब और क्यों? इस वैज्ञानिक युग से युवा वर्ग क्या चाहता है।

– **पं0उम्मेदसिंह विशारद**, वैदिक प्रचारक

महाभारत काल के बाद ऋत सत्य के वैचारिक क्रान्ति का सूर्य "सत्यार्थ प्रकाश" महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित श्रावणी पक्ष वेद प्रचार सप्ताह मे सत्यार्थ प्रकाश घर–घर पहुंचाना है ऋतस्यपथि वेधा अपायि–ऋ0–सत्य के पथ की रक्षा ईश्वर करता है।

ऋषि दयानन्द का जन्म 1824 ई0 में हुआ था। वे 1860. में गुरू विरजानन्द जी के पास विद्याध्ययन के लिये पहुचें। उस समय उनकी आयु 36 वर्ष की थी। 1863 में उन्होने गुरु से दीक्षा ली और अध्ययन समाप्त करके जीवन क्षेत्र में उतर पड़े। इस समय वे 39–40 वर्ष के हो चुके थे। विरजानन्द के पास उन्होने जो सीखा वही उनकी वास्तविक शिक्षा थी। क्योंकि इससे पहले जो कुछ पढ आये थे उसे विरजानन्द जी ने भुला देने की उनसे प्रतिज्ञा ली थी। इस प्रकार ऋषि दयानन्द जी की यथार्थ शिक्षा 1860 से 1863 तक कुल तीन वर्ष की थी। उन्होने पीछे चल कर अपने जीवन काल मे जितने व्याख्यान दिये, जितने ग्रन्थ लिखे, जितने शास्त्रार्थ किये वह इन तीन साल के अध्ययन का परिणाम था। इसी से स्पष्ट होता है कि इन तीन सालो मे उन्होने जो पाया था वह कितना मूल्यवान था।

तीन वर्षों का चमत्कारः– अपने गुरू विरजानन्द जी से ऋषि दयानन्द जी ने जो गुर पाया था वह आर्ष तथा अनार्ष ग्रन्थो मे भेद करना था। 36 वर्ष की आयु से पहले उन्होने जो कुछ पढा था वह अनार्ष ग्रन्थो का अध्ययन था। आर्ष ग्रन्थो के अध्ययन का उनका कुल समय तीन वर्षो का था। इन तीन वर्षो के अध्ययन ने उनके जीवन उनकी विचारधारा मे जो क्रान्ति उत्पन्न कर दी उससे भारत के पिछले सौ वर्षो का इतिहास बन गया।

"धार्मिक सामाजिक व राष्ट्रीय चेतना का मूल स्रोत सत्याथ्र प्रकाश":– अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश 1874 में लिखा गया। मुरादाबाद के राज जयकृष्णदास जब काशी मे डिप्टी कलेक्टर थे तब ऋषि दयानन्द काशी पधारे थे। राजा जयकृष्णदास ने ऋषि से कहा आपके उपदेशामृत से वे ही व्यक्ति लाभ उठा सकते है जो आपके व्याख्यान सुनते है। जिन्हे आपके व्याख्यान सुनने का अवसर नही मिलता उनके लिये अगर आप अपने विचारो को ग्रन्थ रूप मे लिख दे तो जनता का बडा उपकार हो। ग्रन्थ के छपने का भार राजा जयकृष्ण ने अपने ऊपर ले लिया। यह आश्चर्य की बात है कि यह ब्रहत्काय तथा महत्वपूर्ण ग्रन्थ जिसे पण्डित गुरूदत्त विद्यार्थी ने 14 बार पढकर कहा कि हर बार में उन्हे नया रत्न हाथ आता है, कुल साढे तीन महीनो मे लिखा गया।

जिन्होने सत्यार्थ प्रकाश का गहराई से अध्ययन किया उन्होने पाया कि इसमे 377 ग्रन्थो का हवाला हैं इस ग्रन्थ मे 1542 वेदमंत्रों या श्लोको का उदाहरण दिया गया हैं चारो वेद, सब पुराण, ग्रन्थ, सब उपनिषिद, छओ दर्शन, अठारह–स्मृति, सूच पुराण, सूर्य ग्रन्थ, जैन–बौद्धग्रन्थ, बाइबल, कुरान–सबका उदाहरण ही नही उनका रेफरेन्स भी दिया है। किस ग्रन्थ मे कौन सा मंत्र या श्लोक या वाक्य कहां है, उनकी संख्या क्या है– यह सब कुछ इस साढे तीन महीनो में लिखे ग्रन्थ मे मिलता है। जिसने नवीन सामाजिक दृष्टिकोण को जन्म दिया।

सत्यार्थ प्रकाश चुने हुए क्रान्तिकारी विचारो का खजाना हैं:– ऐसे विचार जिन्हे उस युग मे कोई सोच भी नही सकता था। समाज की रचना जन्म" के आधार पर न होकर कर्म के आधार पर होनी चाहिए। यह एक विचार इतना क्रान्तीकारी है कि इसकी क्रिया से हमारी 90 प्रतिशत समस्यायें हल हो जाती है। शिक्षा के क्षेत्र में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का विचार सत्यार्थ प्रकाश की ही देन है लोकमान्य तिलक ने कहा था स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। दादाभाई नोरोजी ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया था। किन्तु इनसे पहले ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश" के 8 वे सम्मुलास मे लिखा था कोई कितना कहे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता हैं।

वर्तमान मे हम जिन समस्याओं को लेकर उलझे रहते है उन सबका निदान सत्यार्थ प्रकाश मे मिलता हैं। जैसे हरिजनो की समस्या– स्त्रियों की समस्या– गरीबी की समस्या, देश भाषा की समस्या चुनाव की समस्या– नियम तथा– व्यवस्था की समस्या, – गौरक्षा की समस्या–नसबन्दी की समस्य– आचार की समस्या–नवयुवको की समस्या–इन सब समस्याओं का हल सत्यार्थ प्रकाश मे पहले से ही हैं

वेदो की समस्याः– हिन्दु समाज की सबसे बडी समस्या वेदो की थी। हर कोई वेदो का नाम लेकर कहता था, स्त्रियों और शूद्रो को वेद पढने का अधिकार नही है क्योंकि वेदो में लिखा है– "स्त्री, शूद्रो ना धीयाताम"। बाल विवाह क्यों होना चाहिए क्योंकि वेदो मे लिखा है। जन्म से वर्ण व्यवस्था क्यो माने, क्योंकि वेदो मे लिखा है।

ब्राह्मणो ऽस्य मुखमासीतः ब्रहाम्ण परमात्मा के मुख से और शूद्र उसके पावं से उत्पन्न हुए है। जब ऋषि दयानन्द जी ने यह देखा कि वेदो का नाम लेकर हर संस्कृत वाक्य को वेद कहा जा रहा है। और वेदो का उदाहरण देकर वेद मंत्रो का अनर्थ किया जा रहा है। तब उन्होने निश्चय किया कि वेदो को केन्द्र बना कर हिन्दु समाज की रक्षा की जा सकती है। ऋषि दयानन्द जी ने वेदों से वेदो पर प्रहार किया।

वेदो के सम्बन्ध मे ऋषि दयानन्द की दूसरी खोज यह थी कि वेदो के शब्द रूढि नही योगिक है। वेदो के उस समय के सभी विद्वानो भाष्यकारो ने वैदिक शब्दो के रूढी अर्थ ही किये थे। सायण, उच्वट, महीधर, मेक्स मूलर, राथं, विल्सन, ग्रासमैन ने एक दूसरे को देखा देखी अर्थ किये थे। किन्तु ऋषि दयानन्द जी ने इस विचार धारा को भी ठोकर मार दी और वेदो के योगिक अर्थ कर के वेदो के प्रति संसार को नया मार्ग दिखाया। ऋषि दयानन्द जी ने हिन्दुओ को हिन्दु रहते हुए उन्हे नवीन विचार धाराओ मे रंग दिया। कोई वृक्ष जड के बिना खडा नही रह सकता। कोई समाज अपने मूल के बिना नही जी सकता। ऋषि दयानन्द जी ने इसी गुर को पकडा था। उन्होने कहा पाछे वेदो की तरफ देखो, उसमे जमकर आगे भविष्य की तरफ पग बढाओ। भूत को छोड देंगे तो वृक्ष की जड कट जायेगी, भविष्य को नही देखेंगे तो उठ नही सकोगें यह ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश का संदेश है, यही ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य का संदेश है। (नोटः कुछ अंश वैदिक संस्कृति का संदेश से लिये गये है:–)

सत्यार्थ–प्रकाश का मुख्य उद्देश्य आर्य समाज का विकास है एक चिन्तन योजना ।:– भारत की वर्तमान जन संख्या के हिसाब से आर्य समाज का विकास संतोष जनक नही है, यह एक महत्वपूर्ण चिन्ता का विषय है। अगर हम चुप बैठे रहे तो आने वाले समय में अधिकांश आर्य समाजो मे ताले लग सकते हैं हमे जागना ही पडेगा।

आज का युवा वर्ग इस वैज्ञानिक युग मे क्या चाहता है ?

आज के अधिकांश युवा वर्ग समाज मे प्रचलित धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक मान्यताओ से ऊब चुके है, कुछ नया चाहते हैं और उनके लिये नया केवल वैदिक विचार धारा ही है क्योंकि वैदिक धर्म विज्ञान व सृष्टि क्रमानुसार हैं आज आर्य समाज को युग के साथ चलकर वैदिक मान्यताओं का प्रचार प्रत्येक रूप से करना होगा। जैसे–

1. सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारह सम्मुलासो को अलग–अलग छपाकर छोटे–ट्रेक्ट के रूप में वितरण किया जाये, छोठे ट्रेक्ट लोग जल्दी पढते है।
2. भारत सरकार से मांग करे कि भारत की शिक्षा पद्धति मे एक विषय वेदो के आर्ष मान्यताओ का पाठ का अनिवार्य किया जाए।
3. यज्ञ पद्धति पंच महायज्ञ की लाखो प्रतियां छपाकर निशुल्क बांटी जाऐ।
4. आर्य समाज की प्रमुख मान्यताऐ, था सोलह संस्कारो का टेक्ट छापें जाये। शराब पीने व घूमपाने से हानिया का लध्यु पुस्तिका वितरण की जाये।
5. आर्य समाज का स्वतन्त्रता आन्दोलन मे योग दान तथा धर्म की वास्तविक परिभाषा क्या हैं, छोटी–छोटी पुस्तके छपवा कर आन्दालेन के रूप मे वितरित की जायें।
7. आर्य समाज ने समाज सुधार, महिलाओ का सुधार, अन्धविश्वास समाप्त, करने व सामाजिक अनेक कुरूतियों को समाप्त करने का कार्य किया।
8. आर्ष और अनार्ष विद्या मे आर्ष साहित्य या ज्ञान को छोटे–छोटे पुस्तिका रूप में छाप कर वितरण करना चाहिए।

नोटः उक्त छोटे–छोटे ट्रेक्टो को छापवाकर लाखो की संख्या मे निशुल्क सार्वजनिक वितरण किये जाये तो लोकचाहे थोडा ही पढे पर जिज्ञासा से पडेंगे।

प्रत्येक ट्रेक्ट के ऊपर लिखा जाए (हिन्दु धर्म का रक्षक) आर्य समाज हैं। वेदो की ओर लौटे–।

–गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून उत्तराखण्ड।
मो0–9411512019, 9557641800

(पृष्ठ 1 का शेष)

ओमप्रकाश यजुर्वेदी, डा. आनन्द कुमार, ठाकुर विक्रम सिंह, श्री आर.एस. तोमर, एडवोकेट, चौ.हरिसिंह सैनी, अरविन्द मेहता (पंजाब), श्री दर्शन अग्निहोत्री, परिषद् के महामंत्री महेन्द्र भाई, रामकुमारसिह, सुरेन्द्र शास्त्री, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, प्रवीन आर्य, गायत्री मीना, आनन्दप्रकाश आर्य (हापुड़), रमाकांत सारस्वत (आगरा), रघुवीरसिंह आर्य (शामली), डा. गजराजसिंह आर्य (फरीदाबाद), गोबिन्दसिंह भण्डारी (बागेश्वर), प्रेमपकाश शर्मा (देहरादून), हाकमसिंह आर्य (रूड़की), चौ. लाजपतराय आर्य (करनाल), ईश आर्य (हिसार), विजय आर्य (मोहाली), सूर्यदेव आर्य (जीन्द), सोमदत शास्त्री (चण्डीगढ़), राजेन्द्र बीसला (पूर्व विधायक, बल्लभगढ़), सत्यवीर चौधरी (गाजियाबाद), भवंरसिह आर्य (जोधपुर), भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दौर), मित्रमहेश आर्य (अहमदाबाद), यशपाल यश (जयपुर), रामकृष्ण शास्त्री (बहरोड़), पं. धनेश्वर बेहरा (उड़ीसा), खुशहालचन्द आर्य (कोलकता), आनन्द कुमार आर्य (टान्डा), वीरेश भाटी (नोएडा) आदि की विशेष उपस्थिति रही व दल बल सहित पहुंचे। गुरूकुल के मुख्य अधिष्ठाता श्री दीनानाथ शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया। गुरूकुल के समस्त साथियों का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ। सम्मेलन अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ और आर्य जन एक नया उत्साह लेकर घरों को विदा हुए।

सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़े?

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

अच्छी ज्ञानवर्धक पुस्तकें सभी मनुष्यों को पढ़नी चाहियें। अनेक पुस्तकों को धार्मिक ग्रन्थों की संज्ञा दी जाती है। धार्मिक का अर्थ होता है जिसमें धर्म के विषय में जानकारी दी गई हो। धर्म शब्द संस्कृत का शब्द है। हमारे विचार से यह न उर्दू में, न अरबी में, न अंग्रेजी में और न विश्व की अन्य भाषाओं में हैं। संसार की सबसे पुरानी भाषा संस्कृत है। यह भी कह सकते हैं कि संस्कृत संसार की सभी भाषाओं का उद्गम है। संस्कृत के शब्दों के अपभ्रंस होकर, भौगोलिक कारणों व उच्चारण दोषों सहित देश, काल व बदलती परिस्थितियों के कारण भाषा व भाषाओं का स्वरूप बदलता रहता है। इसी कारण संस्कृत की विकृतियां होती रहीं और उनसे भाषा में परिवर्तन होते रहे और सृष्टि के आरम्भ से अब तक लगभग 2 अरब वर्षों में अनेक भाषायें अस्तित्व में आयी हैं। सृष्टि का आदि ग्रन्थ वेद है जो संस्कृत भाषा में है। वेद के शब्द रूढ़ नहीं अपितु योग–रुढ़ व यौगिक हैं। संस्कृत की आर्ष व्याकरण व निरुक्त के अनुसार उनके अर्थ जाने जाते हैं। वेद ज्ञान को कहते हैं और वेदों में जो ज्ञान है उसमें ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति सहित मनुष्य के सभी कर्तव्यों व सभी मुख्य सामाजिक रीतियों का ज्ञान व उन्हें करने की प्रेरणा की गई है। महाभारत काल व उसके कुछ काल बाद तक संस्कृत का पूरे विश्व में प्रचार रहा है। उसके बाद विश्वगुरु भारत ने विदेशों में भाषा एवं ज्ञान का प्रचार करना प्रायः बन्द कर दिया था जिससे संसार में भाषा व धर्म के ज्ञान की दृष्टि से अन्धकार छा गया। इस कारण संस्कृत के विद्वान कम होते गये और इसके परिणामस्वरुप वेदों का अध्ययन व अध्यापन भी समाप्त प्रायः हो गया। मीमांसा दर्शन के रचयिता जैमिनी ऋषि हैं। इनके बाद ऋषियों की परम्परा टूट गई।

संस्कृत के अप्रचलित होने व उसका ज्ञान लोगों में न्यून होने से वेदों के सत्यार्थ भी विलुप्त हो गये और उसके स्थान पर अनेक भ्रान्तिपूर्ण मान्यतायें वेदों के नाम पर देश देशान्तर में प्रचलित होती रहीं। वेद के सत्य अर्थों का प्रचार व आचरण न होने से समाज कमजोर हुआ, उसमें विकृतियां आईं ओर नाना प्रकार के अविद्याजन्य मत–मतान्तर उत्पन्न हुए। आठवीं सदी में सिन्ध के राजा यवनों से पराजित हुए। विधर्मियों ने उनकी हत्या कर दी। उनकी पुत्रियों से अनाचार किया गया। इस घटना के बाद देश गुलामी की ओर बढ़ चला। अंग्रेजों की गुलामी आरम्भ होने से पूर्व हम यवनों के गुलाम रहे और इसके बाद अंग्रेजों के गुलाम हो गये। इस गुलामी से सन् 1947 में आजादी मिली और देश का विभाजन होकर देश तीन टुकड़ों भारत, पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान में बंट गया। अंग्रेजों की गुलामी के दिनों में ही गुजरात प्रांत के मोरवी राज्य के अन्तर्गत टंकारा ग्राम में ऋषि दयानन्द का जन्म होता है जिन्होंने आगे चलकर भारत में धार्मिक व सामाजिक जागरण के साथ राजनीतिक जागरण का अपूर्व कार्य किया। उनके कार्य को हम धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्रान्ति भी कह सकते हैं। ऋषि दयानन्द महाभारतयुद्ध के बाद वेदों के अपूर्व व उसके सत्य अर्थों के प्रचारक विद्वान थे। उन्होंने डिन्डिम घोषणा की कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और प्रत्येक मनुष्य के लिए आचरणीय है। वेदों का आचरण ही धर्म है और वेद विरुद्ध आचरण ही अधर्म व पाप है। उन्होंने वेद और ऋषियों की मान्यताओं के आधार पर सत्य धर्म का स्वरूप अपने ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में प्रस्तुत किया है। यह ग्रन्थ विश्व के समस्त साहित्य में अन्यतम है। इससे मनुष्य को अपनी आत्मा का ज्ञान, जीवन का उद्देश्य, परमात्मा का स्वरूप व उसके गुण, कर्म व स्वभाव सहित कारण व कार्य प्रकृति का यथार्थ व समुचित ज्ञान होता है। यह ग्रन्थ सभी मनुष्यों के लिए पठनीय है। इसकी विषयवस्तु एवं कुछ विशेषाताओं को आगे की पंक्तियों में बताने का प्रयास कर रहे हैं।

सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का प्रयोजन बताते हुए ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में कहा है कि मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य–सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उस को सत्य और जो मिथ्या है उस को मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्याऽसत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयम् अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें। ऋषि दयानन्द ईश्वर को सर्वज्ञ एवं जीवात्मा व मनुष्य को अल्पज्ञ मानते हैं। जीवात्मा सर्वज्ञ कभी नहीं हो सकता। उसका ज्ञान भी बिना ईश्वर के साक्षात्कार व वेदाध्ययन के निर्भ्रान्त कभी नहीं हो सकता। इस कारण इतिहास में जिन जन्मधारी मनुष्यां ने किसी मत व पंथ आदि का आरम्भ व प्रवर्तन किया हैं उन मतों में अविद्या व अज्ञानपूर्ण मान्यताओं का होना सम्भव वा अपरिहार्य है। इसी बात को ऋषि दयानन्द अपने शब्दों में कहते हुए सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखते हैं 'मनुष्य का आत्मा सत्याऽसत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य मं झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ (सत्यार्थप्रकाश) में ऐसी बात नहीं रक्खी है और न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्याऽसत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के विना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है। सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में अन्य अनेक अति महत्वपूर्ण बातें और भी हैं परन्तु विस्तारभय से हम यहां उनका उल्लेख नहीं कर पा रहे हैं।

सत्यार्थप्रकाश की रचना का एक उद्देश्य यह भी था कि ऋषि दयानन्द जो महत्वपूर्ण उपदेश दिया करते थे, उनसे वही लोग लाभान्वित होते थे जो उपदेश सुनने आते थे। अन्य लोग जो उनके उपदेशों में सम्मिलित नहीं हो पाते थे, वह भी ऋषि दयानन्द के विचारों से लाभान्वित हो सकें, इस कारण लोगों के परामर्श एवं अपनी विवेक बुद्धि से उन्होंने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ लिखने का निश्चय किया था। इस ग्रन्थ का लाभ भविष्य में समाज, देश व विश्व के सभी लोगों को होना था, यह भी सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के लेखन का मुख्य कारण था। इस ग्रन्थ के लेखन से ऋषि दयानन्द के अपने व प्राचीन ऋषियों के विचार जिनके उद्धरण इस ग्रन्थ में हैं, हमेशा के लिए सुरक्षित हो गये हैं। इन सब कारणों से सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का प्रणयन ऋषि दयानन्द ने किया था। सत्यार्थप्रकाश में कुल 14 अध्याय हैं जिन्हें समुल्लास कहा गया है। प्रथम दस समुल्लास पूर्वाद्ध कहलाते हैं और बाद के चार समुल्लास उत्तरार्ध कहलाते हैं। प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ से कुछ अधिक नामों की व्याख्या की गई है। इस समुल्लास में मंगलाचरण समीक्षा भी है। एक ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव व सम्बन्धों से परिचित कराने वाले सौ से अधिक नामों को सत्यार्थप्रकाश पढ़कर जाना जा सकता है। इससे पूर्व इस प्रकार का ईश्वर के सौ से अधिक नामों का प्रस्तुतिकरण व विवेचन किसी अन्य ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं होता। दूसरे समुल्लास में बालशिक्षा, भूतप्रेतादिनिषेध तथा जन्मपत्रसूर्यादिग्रह समीक्षा सहित इनसे संबंधित अनेक विषयों पर वेद एवं ऋषियों के ग्रन्थों के अनुसार प्रकाश डाला गया है। इस समुल्लास को पढ़कर पाठक का वेद, ऋषियों व स्वामी दयानन्द जी के चरणों में मस्तक झुक जाता है। तृतीय समुल्लास वस्तुत अध्ययन–अध्यापन विषय पर है और इसके साथ इसमें अन्य अनेक विषयों का भी वर्णन किया गया है। इनमें जो अन्य मुख्य विषय वर्णित हुए हैं वह हैं गुरुमन्त्र व्याख्या, प्राणायाम शिक्षा, सन्ध्याग्निहोत्र उपदेश, यज्ञपात्राकृतयः, उपनयन समीक्षा, ब्रह्मचर्योपदेश, ब्रह्मचर्यकृत्यवर्णन, पंचधा परीक्ष्याध्ययन–अध्यापन, पठनपाठन विशेष विधि, ग्रन्थ प्रामण्याप्रामाण्य विषय व स्त्रीशूद्राध्ययन विधि आदि।

चौथे समुल्लास में भी अनेक विषय वर्णित हैं। प्रमुख विषय हैं समावर्त्तन, दूरदेश में विवाह करना, विवाहार्थ स्त्रीपुरुष परीक्षा, अल्पवयसि विवाह निषेध, गुणकर्मानुसारेण वर्ण व्यवस्था, विवाह के लक्षण, स्त्री–पुरुष व्यवहार, पंचमहायज्ञ, पाखण्ड तिरस्कार, प्रातः जागरण, पाखण्डियों के लक्षण, गृहस्थ धर्म, पण्डित के लक्षण, मूर्ख के लक्षण, पुनर्विवाह पर विचार, नियोग विषय, गृहाश्रम की श्रेष्ठता आदि। पांचवें समुल्लास में वानप्रस्थ एवं संन्यासाश्रम की विधि दी गई है। छठे समुल्लास में मुख्यतः राजधर्म, राजा के लक्षण, दण्ड व्यवस्था, राजा के कर्तव्य, अठ्ठारह व्यस्नों का निषेध, मन्त्रियों के कार्य, दुर्ग निर्माण, युद्ध प्रकार, राज्य की रक्षा, कर ग्रहण, राजा के मित्र, उदासीन व शत्रुओं का विषय, शत्रुओं से युद्ध करने के तरीके एवं व्यापार आदि विषयों का वर्णन है। सातवां समुल्लास महत्वपूर्ण समुल्लास है। इस समुल्लास में ईश्वर, ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना, ईश्वर के ज्ञान का प्रकार, ईश्वर का अस्तित्व, ईश्वर का अवतार होने का खण्डन, जीव की स्वतन्त्रता, जीव और ईश्वर की भिन्नता का वर्णन, ईश्वर की सगुण व निर्गुण भक्ति का वर्णन तथा वेद के विषयों पर विचार किया गया है और वेदों की निर्णायक व निश्चयात्मक मान्यताओं व सिद्धान्तों का वर्णन है। सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में सृष्टि उत्पत्ति, ईश्वर से भिन्न सृष्टि के उपादान कारण प्रकृति का वर्णन, सृष्टि की आदि में मनुष्यों की उत्पत्ति के स्थान का निर्णय, आर्य व इतर मनुष्य जाति के उल्लेख सहित ईश्वर के द्वारा जगत को धारण करने का विस्तार से प्रभावशाली एवं स्पष्ट वर्णन है। दशवें समुल्लास में आचार अनाचार सहित भक्ष्य व अभक्ष्य पदार्थों का वर्णन है। उत्तरार्ध के चार समुल्लासों में आर्यावर्त्तीय मत–मतान्तर के खण्डन–मण्डन के विषय सहित बौद्ध. जैन, चारवाक सहित क्रिश्चियन तथा यवन मत की समीक्षा की गई है। अन्त में 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में ऋषि दयानन्द ने वेदों के आधार पर निश्चित अपनी निजी 51 मान्यताओं पर प्रकाश डाला है।

सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने से मनुष्य सत्य धर्म का निश्चय कर सकता है। उसे अपने कर्तव्य का बोध हो जाता है जिसका पालन कर वह धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त होता है। आर्य समाज की सभी मान्यतायें वेदों पर आधारित एवं वेदानुकूल हैं जो तर्क की कसौटी पर अकाट्य सिद्ध होने के साथ सत्य हैं। सत्यार्थप्रकाश में वेद प्रतिपादित ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरूप व इनके गुण, कर्म व स्वभाव का जैसा वर्णन है वैसा विश्व के किसी मत वा धर्म के साहित्य में उपलब्ध नहीं होता। मनुष्य का जीवन ईश्वरोपासन एवं अग्निहोत्र आदि करके श्रेष्ठ व पवित्र बनता है। यह ऐसा जीवन है कि जिसका उल्लेख व ज्ञान भी हमारे अन्य मतावम्बियों को नहीं है। संक्षेप में मनुष्य को वेदाध्ययन कर ज्ञान प्राप्ति होती है और साथ ही सत्यार्थप्रकाश आदि का अध्ययन कर वह संसार को यथार्थ रूप में जानकर अपने कर्तव्यों का निर्धारण कर सकता है। जीवन के लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के लिए ईश्वरोपासना व अग्निहोत्र आदि कर्तव्यों के द्वारा अपने लक्ष्य की प्राप्ति में आगे बढ़ता जाता है। वेदों की सभी मान्यतायें सभी ज्ञानी व अज्ञानी मनुष्यों के लिए सत्य एवं आचरणीय हैं। वेद ज्ञान का वटवृक्ष है जिसकी शरण में आने पर अज्ञान व विषयों के सेवन से आक्रान्त व जीर्ण मनुष्य को शान्ति मिलती है और जीवन जीने की सही दिशा प्राप्त होती है। इस कारण से सभी मनुष्यों को सत्यार्थप्रकाश का बार बार धर्म ग्रन्थ मानकर अध्ययन करना चाहिये। सत्यार्थप्रकाश पढ़कर एवं उसकी शिक्षाओं पर आचरण कर मनुष्य निश्चय ही उन्नति को प्राप्त होता है तथा वह अपने लक्ष्य के निकट पहुंचता है व उसे प्राप्त करता है। ओ३म् शम्।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

दिल्ली चलो आर्यो हम मस्तों मे आन मिले कोई हिम्मत वाला रे दिल्ली आओ युवकों

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के 40 वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में

राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन

रविवार, 9 सितम्बर 2018, प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक

स्थानः योग निकेतन सभागार, रोड न. 78, पश्चिमी पंजाबी बाग,दिल्ली–110026

सभी आर्य युवक सादर आमन्त्रित हैं। दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य युवक अपने आने की सूचना शीघ्र दें जिससे आवास आदि का यथोचित प्रबन्ध किया जा सके। प्रातः नाश्ते,दोपहर भोजन व सायं काल जलपान आदि की सुन्दर व्यवस्था रहेगी। सम्पर्कः सौरभ गुप्ता–9971467978, अरूण आर्य–9818530543, रामकुमार सिंह–9868064422, देवेन्द्र भगत–9958889970, प्रवीन आर्य–9911404423.

दर्शनाभिलाषीः–

अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	रामेश्वर गोयल	दर्शन अग्निहोत्री
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	स्वागत मन्त्री

अन्तर्राष्ट्रीय गुरूकुल महासम्मेलन गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार की सचित्र झलकियां

मंच पर पूर्व मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड व सांसद श्री रमेश पोखरियाल "निशंक" के साथ उत्तराखण्ड सभा के प्रधान श्री गोबिन्दसिंह भण्डारी,परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य व उत्तर प्रदेश सभा के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी। द्वितीय चित्र–श्री वृक्षप्रेमी (बागेश्वर) का स्वागत करते अनिल आर्य, रविदेव गुप्ता, गोबिन्दसिंह भण्डारी।

आर्य नेता गोबिन्दसिंह भण्डारी(बागेश्वर) का स्वागत करते अनिल आर्य,महेन्द्र भाई,प्रवीन आर्या व हाकमसिंह जी। द्वितीय चित्र–पतजंलि योगपीठ के केन्द्रीय प्रभारी व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा के पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष डा.जयदीप आर्य का स्वागत करते स्वामी आर्यवेश जी,अनिल आर्य व स्वामी यतिश्वरानन्द जी।

हरिद्वार जिला सभा के प्रधान श्री मनपालसिंह आर्य का स्वागत करते सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान अनिल आर्य, साथ में सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी व उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान चौ. धीरज सिह। द्वितीय चित्र–आर्य जगत के मूर्धन्य भजनोपदेशक पं.सत्यपाल पथिक का अभिनन्दन करते आचार्य बालकृष्ण जी,स्वामी आर्यवेश जी,पं. दिनेश पथिक,अनिल आर्य,प्रो.विठ्ठलराव आर्य व स्वामी प्रणवानन्द जी। स्वामी रामदेव जी की और से एक लाख रू की राशी से पथिक जी का अभिनन्दन किया गया।

गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार के सम्मेलन का भव्य पण्डालः स्वामी रामदेव जी उद्बोधन देते हुए

उत्तराखण्ड विधान सभा अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द अग्रवाल का अभिनन्दन करते सार्वदेशिक सभा के अधिकारीगण।

जहाँ नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद है उसका नाम

अपीलः केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता सं. 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस.कोड **-SBIN0001280** पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868002130 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित। – डा. अनिल आर्य, मो.09810117464

शोक समाचार : विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री सुरेशचन्द गुप्ता (पूर्व प्रधान, आर्य समाज, नया आर्य नगर, गाजियाबाद) का निधन।
2. श्रीमती कंचन बाली (माता श्री पीताम्बर बाली, प्रधान, आर्य समाज, सराय रोहेल्ला) का निधन।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक :** दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970